डा. कपिल देव शर्मा
निदेशक

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन,
रूड़की-247667

निदेशक की कलम से.....

मुझे यह कहते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान अपनी एकमात्र वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'प्रवाहिनी' का प्रकाशन कर रहा है। यह पत्रिका का 12वाँ (2004-2005) अंक है।

किसी भी देश की भाषा उसकी जनता के विचारों और भावों को अभिव्यक्त करने की एक प्रमुख साधन होती है। यही भाषा उस राष्ट्र के गौरव और अस्मिता की द्योतक है, उसकी पहचान है। भारत के संविधान निर्माताओं ने इस बात को ध्यान में रखकर ही देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया, क्योंकि यह भाषा देश के एक विशाल जन-समूह द्वारा बोली व समझी जाती है। 14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को संविधान सभा द्वारा राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई। आज इसी निर्णय का अनुसरण करते हुए सभी सरकारी कार्यालय अपना कामकाज हिन्दी में निष्पादित करने के लिए दृढ़ संकल्प हैं।

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान भारतीय संविधान में राजभाषा हिन्दी संबंधी विभिन्न प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए हिन्दी के प्रयोग, प्रचार-प्रसार तथा विकास के लिए समर्पित है। संस्थान आने वाले समय में अपने दैनिक तथा प्रशासनिक कार्यों के अलावा वैज्ञानिक कार्यों को भी हिन्दी में निष्पादित करने का पूरा प्रयास कर रहा है। संस्थान अन्य कार्य-कलापों के साथ-साथ हिन्दी के प्रयोग में अभिवृद्धि सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पिछले 12 वर्षों से उक्त पत्रिका का प्रकाशन करता आ रहा है। प्रस्तुत अंक में संस्थान के ही नहीं अपितु संस्थानेत्तर व्यक्तियों ने भी अपने रोचक, ज्ञानवर्द्धक तथा महत्वपूर्ण लेख प्रस्तुत किए हैं। मैं इस सराहनीय योगदान के लिए उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

मुझे उम्मीद है कि पाठक इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों को रूचिकर तथा उपयोगी पायेंगे। पत्रिका की प्रस्तुति, सामग्री तथा अन्य विद्याओं के सुधार संबंधी आपके सुझावों का स्वागत है। मैं "प्रवाहिनी" के इस अंक के सम्पादन, टंकण, प्रूफ शोधन तथा प्रकाशन संबंधी समस्त कार्यों से जुड़े पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई देता हूं तथा इस पत्रिका की श्रीवृद्धि की मंगल कामना करता हूं।

(कपिल देव शर्मा)